कवि परिचय

वीरेन्द्र मिश्र

कवि एवं गीतकार वीरेन्द्र मिश्र का जन्म दिसम्बर सन् 1927 को ग्वालियर में हुआ था। उनका जीवन आर्थिक संघर्षों और सामाजिक थपेड़ों से जूझते हुए प्रारंभ हुआ । संघर्षशील जीवन जीते हुए उन्होंने बड़ी कठिनाई से अपना ग्रेजुएशन पूरा किया। उन्होंने जीवन मूल्यों के प्रति पूर्णत: समर्पित होकर, स्वाभिमान पूर्वक, असमानताओं से लोहा लेते हुए कठिन जीवन जिया। जहाँ एक ओर वे अत्यन्त विनम्र, सहज, स्नेहशील और कोमल हृदय थे, वहीं दूसरी ओर प्रबल आत्माभिमानी, दृढ़निश्चयी और संघर्षशील साहित्यकार थे। अपनी आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए वे निरन्तर इधर-उधर भटके और छोटी मोटी नौकरियाँ भी की। वे मंचीय कविता के वरिष्ठ एवं लोकप्रिय कवि, गीतकार के रूप में प्रख्यात रहे हैं। उन्होंने लगभग एक दर्जन फिल्मों के लिए गीत लिखे हैं। अपने समय में मिश्रजी कवि सम्मेलनों के लिए अपरिहार्य बन गये थे। जून सन् 1975 को आपका निधन हुआ।

मिश्र जी की लिखी हुई गीतम, मधुवंती, गीत पंचम, उत्सव गीतों की लाश पर, वाणी के कर्णधार, धरती गीताम्बरा, शांतिगंधर्व आदि रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। उन्होंने गीत, नवगीत, राष्ट्रीय गीत, व्यंग्य गीत, मुक्तक के अलावा रेडियो नाटक, बाल

आदिकाल से मनुष्य के भावों का प्रस्फुटन काव्य के माध्यम से हुआ है। कवि हृदय जब प्राकृतिक सुन्दरता के मनोहारी दृश्य का अवलोकन करता है तो वह प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। यही शक्ति उसे भावों की गहनता के साथ-साथ गूढ़ अर्थ भी प्रदान करती है। प्रकृति सदैव से मनुष्य की प्रेरणादायी शक्ति रही है।

आधुनिक युग में कवि वीरेंद्र मिश्र ने अपने गीतों के माध्यम से आधुकि हिन्दी कविता को नई संवेदना और नई लय प्रदान की है। प्रस्तुत गीत में कवि ने वर्षा ऋतु के बादल को संबोधित किया है। बादल ही धरती को जीवन देता है। वह बिन भेदभाव के गागर और सागर पर बरसकर इन्हें जल से आपूरित करता है। बादल बरसेगा तो पुरवैया का मान बढ़ेगा, कजरी की तान छिड़ेगी। बादल को आमंत्रित करता यह गीत हमारे आधुनिक जीवन का संदर्भ भी प्रस्तुत करता है।

सुमन जी की कविताओं में अदम्य साहस, ओज और तेजस्विता, प्रेम, करुणा और रागात्मकता तथा प्रेरणा एक साथ देखने को मिलती हैं। प्रस्तुत कविता 'चलना हमारा काम है' के द्वारा कवि ने निरन्तर बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है। आशा और निराशा में, सुख और दुख में कवि सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता है। तथा चलते रहने वालों की सफलता के प्रति आश्वस्त दिखलाई पड़ता है।

साहित्य की भी रचना की।

मिश्रजी परिवार, समाज, राष्ट्र तथा साहित्य में व्याप्त रूढ़ि, विषमता तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। उनका यह संघर्ष इतिहास के प्रत्येक जीवन संघर्ष से प्रतिबद्ध रहा।

मिश्रजी छायावाद के बाद के उन गीतकारों में से रहे हैं जिन्होंने अपने गीतों में अपने समय एवं समाज की प्रगतिशील आकांक्षाओं को अभिव्यक्त किया है। उनके गीतों में राष्ट्रीय गौरव के साथ-साथ साम्राज्यवाद-पूँजीवाद के घृणित स्वरूप का चित्रण तथा अन्याय, शोषण और विषमता के विरुद्ध एक सच्ची मानवीय चिन्ता मिलती है। उसमें शक्ति और दृढ़ता, आस्था और विश्वास कि प्रतिध्वनियाँ लगातार मिलती हैं। मिश्रजी प्रणय के मधुर स्वरों के गायक भी है। उनके भावभरे गीतों में जहाँ एक भावुक प्रेमी कवि के प्रणय की अनुगूँजे हैं, वहीं व्यथा एवं पीड़ा के मार्मिक स्वर भी हैं।

वीरेन्द्र मिश्र के गीतों की भाषा सहज व्यावहारिक तथा लोक प्रचलित शब्दों से युक्त है। उनके गीतों मे कसावट और संगीतात्मकता है।

अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण वीरेन्द्र मिश्र का महत्वपूर्ण स्थान है। 1959 में नवगीत के रूप में कविता की भी वापसी हुई वीरेन्द्र मिश्र इस नवगीत परम्परा के विशिष्ट कवि माने जाते है ।

बरसो रे

बरसो रे ,

बरसो रे ,

बरसो रे,

अम्बर के शिखरों से उतरो रे

जीवन देने राहों में

ऊँची-नीची जीवन घाटी से

प्रतिध्वनियाँ आती हैं माटी से

गागर से सागर ढुलकाओ, घन!

अब तो हँसते- गाते आओ, घन।

इन मिलनातुर बाहों में

पुरवैया नैया के पालों में

नभ के नारंगी रुमालों में

सूरज का रथ धीमा-धीमा है

सपनों की क्या कोई सीमा है

अमराई की छाँओं में

आओ तुम कजरी को स्वर देने

वाणी को पानी के वर देने

कल तक तुम घिर-घिर कर छाए थे

कल तक तो तुम केवल आए थे।

बरखा की अफवाहों में

कवि परिचय

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन का जन्म उन्नाव जनपद (उत्तरप्रदेश) के अंतर्गत झगरपुर नामक ग्राम में सन् 1915 ई. में नागपंचमी के शुभ अवसर पर हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इसी ग्राम में हुई। इसके बाद वे ग्वालियर चले गए और वहाँ के विक्टोरिया कॉलेज से उन्होंने बी.ए. पास किया। 1940 में एम. ए. की डिग्री प्राप्त की। डी.लिट. की उपाधि उन्होंने काशी विश्वविद्यालय से प्राप्त की। अपना विद्यार्थी जीवन पूर्ण करने के पश्चात् उन्होंने अध्यापन कार्य किया। इसी बीच नेपाल स्थित भारतीय दूतावास में सांस्कृतिक सहायक के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। वहाँ से स्वदेश लौटने पर वे 1961 ई. में माधव कालेज उज्जैन के प्राचार्य नियुक्त हुए। तत्पश्चात् वे विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में कुलपति के पद पर आसीन हुए। ये भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किए गए हैं।

'हिल्लोल', 'जीवन के गान', 'प्रलय सृजन', 'विश्वास बढ़ता ही गया' 'पर आँखे नहीं भरीं' तथा 'विंध्य हिमालय' सुमन जी की प्रमुख रचनाएँ हैं।

सुमन जी की कविता सामाजिक जीवन तथा राष्ट्रीय चेतना से जुड़ी हुई है। उसमें सांस्कृतिक

चलना हमारा काम है

गति प्रबल पैरों में भरी
फिर क्यों रहूँ दर–दर खड़ा
जब आज मेरे सामने
है रास्ता इतना पड़ा
जब तक न मंजिल पा सकूँ, तब तक मुझे न विराम है,
चलना हमारा काम है।

कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया
कुछ बोझ अपना बँट गया
अच्छा हुआ तुम मिल गए
कुछ रास्ता ही कट गया
क्या राह में परिचय कहूँ, राही हमारा नाम है,
चलना हमारा काम है।

जीवन अपूर्ण लिए हुए
पाता कभी खोता कभी,
आशा–निराशा से घिरा
हँसता कभी रोता कभी,
गति–मति न हो अवरुद्ध, इसका ध्यान आठों याम है,
चलना हमारा काम है।

तत्व भी विद्यमान रहता है। सुमन जी प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। जीवन के गान में संगृहीत उनकी रचनाओं में शोषित, दलित एवं उपेक्षित मानव के प्रति सहानुभूति एवं शोषक सत्ताधारियों के प्रति विद्रोह भावना सजग हो उठी है। सुमन जी की कविताओं में जागरण एवं निर्माण का संदेश है।

सुमन जी आस्था तथा विश्वास के गीतकार हैं। इस दृष्टि से 'वरदान माँगूँगा नहीं' तथा 'तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार' आदि ओजस्वी गीत उल्लेखनीय हैं।

सुमन जी की शैली पर उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट है। उनकी शैली में सरलता एवं स्वाभाविकता है। भाव विभोर होकर वे जिस समय गीतों की रचना करते हैं उस समय उनकी भाषा उनके भावों का अनुगमन करती है। शब्द चयन, कल्पना तथा भाव सौन्दर्य की दृष्टि से उनकी भाषा समर्थ, सशक्त कही जा सकती है। उनकी शैली ओज, माधुर्य एवं प्रसाद गुणों से सम्पन्न है। गीतों में स्वाभाविकता, संगीतात्मकता, मस्ती और लय है। सुमन जी सरल एवं व्यावहारिक भाषा के पक्षपाती हैं। उनकी खड़ी बोली में संस्कृत के सरल तत्सम शब्दों के साथ कहीं-कहीं उर्दू के शब्द भी मिल जाते हैं किन्तु वे खटकते नहीं, भावों को उद्दीप्त करने में सहायक होते हैं। सुमन जी एक प्रखर एवं ओजस्वी वक्ता थे।

सुमन जी की भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग किया है। आपकी रचनाओं में सर्वत्र कोमल कांत पदावली है। शब्दों की शिल्प रचना में तो आप निश्चय ही दक्ष हैं।

इस विशद विश्व-प्रवाह में
किसको नहीं बहना पड़ा,
सुख-दुख हमारी ही तरह
किसको नहीं सहना पड़ा,
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ, मुझ पर विधाता वाम है,
चलना हमारा काम है।

मैं पूर्णता की खोज में
दर-दर भटकता ही रहा
प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा
पर हो निराशा क्यों मुझे ? जीवन इसी का नाम है,
चलना हमारा काम है।

कुछ साथ में चलते रहे
कुछ बीच ही से फिर गए
पर गति न जीवन की रुकी
जो गिर गए सो गिर गए,
चलता रहे हमदम, उसी की सफलता अभिराम है,
चलना हमारा काम है।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि के लिए कब तक विराम नहीं है?
2. जीवन को अपूर्ण क्यों कहा ?
3. कजरी कब गाई जाती है?
4. बादलों से मिलने के लिए कौन–कौन से प्राणी आतुर रहते हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विशद विश्व प्रवाह में बहने का अर्थ क्या है?
2. सफलता प्राप्त करने का मूल मंत्र क्या है?
3. कवि मेघों से पृथ्वी पर उतरने के लिए आह्वान क्यों कर रहा है?
4. कवि ने सूरज के रथ को धीमा–धीमा क्यों बताया है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'गति–मति न हो अवरुद्ध' इसके लिए कवि ने क्या–क्या प्रयास किए हैं?
2. 'चलना हमारा काम है' कविता की मूल भावना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।
3. कवि बादलों को हँसते–गाते आने के लिए क्यों कहता है ?
4. निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ व प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

   (अ)ऊँची–नीची जीवन घाटी .... बाहों में।

   (आ) आओ तुम .....अफवाहों में।

   (इ) जीवन अपूर्ण .....काम हैं।

   (ई) मैं पूर्णता .....काम हैं।

काव्य सौंदर्य–

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

   सागर, आकाश, सूर्य, पानी, बादल हाथी,
2. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए

   छाँह, बरखा, नैया, माटी, बानी अचम्भा

योग्यता विस्तार

1. वर्षा ऋतु से संबंधित कविता लिखिए।
2. शिवमंगल सिंह सुमन के ओजस्वी गीतों का संकलन कीजिए।
3. मध्यप्रदेश के प्रमुख साहित्यकारों के जीवन परिचय एवं साहित्य के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए ।

***